बुद्धि की संरचना का सिद्धान्त
(Structure of Intelligence Theory)

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक जे० पी० गिलफोर्ड हैं। उन्होंने अपने परीक्षणों द्वारा यह प्रतिपादित करने की चेष्टा की है कि व्यक्ति की किसी भी मानसिक प्रक्रिया या बौद्धिक कार्य को तीन आधार-भूत आयामों या विमाओं (Basic Dimensions) में बांटा जा सकता है।

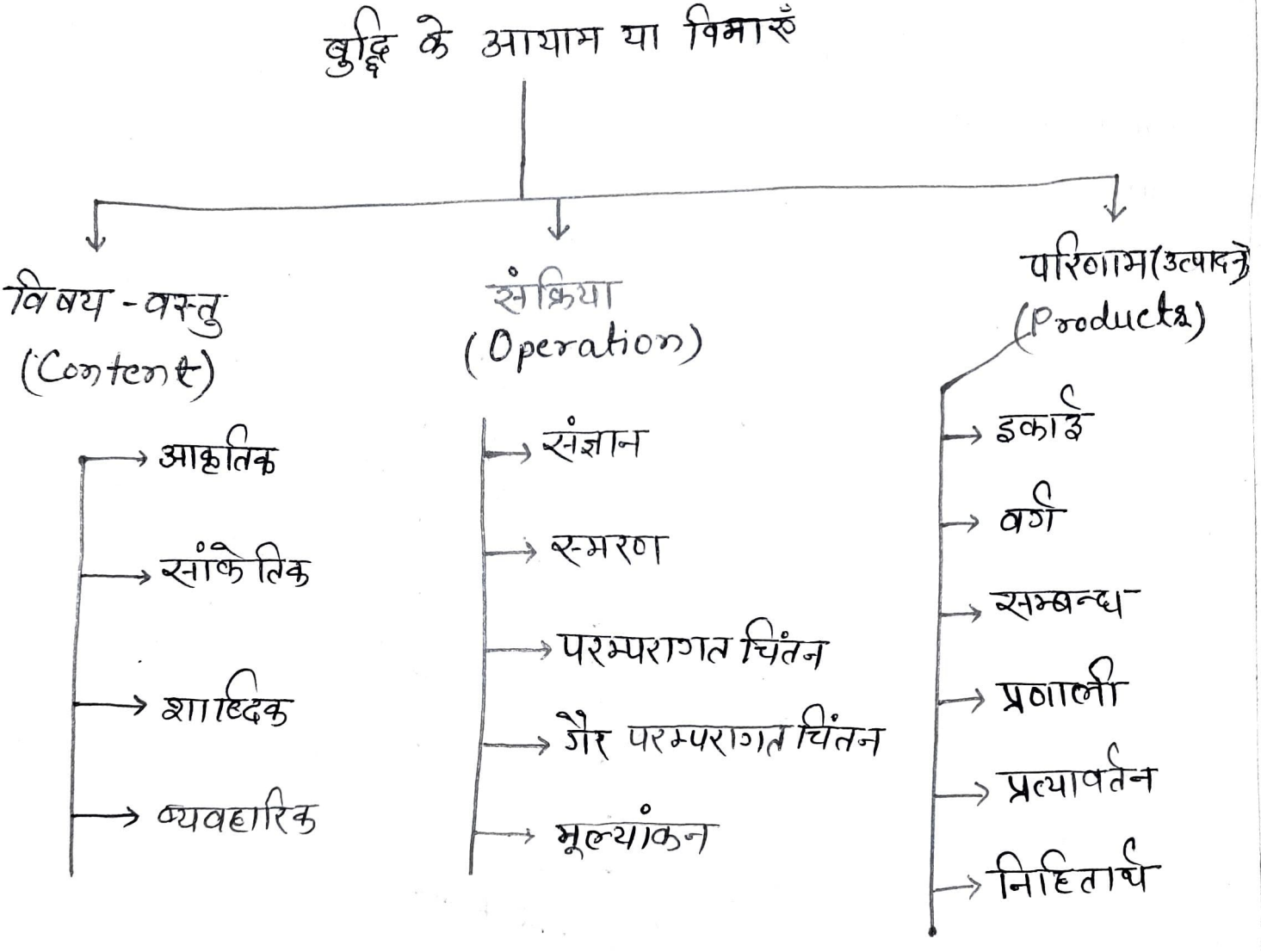

1. <u>विषय-वस्तु (Content)</u> :- प्रथम विमा को उन्होंने मानसिक कार्य करते समय निहित विषय वस्तु या सामग्री के रूप में परिभाषित किया और कहा कि व्यक्ति जिस रूप में चिंतन या मनन करने के लिए जिस प्रकार की विषयवस्तु या सूचना सामग्री की सहायता

लेता है उसे विषयवस्तु कहा जाता है।

2. संक्रिया (Operation) :— दूसरी विमा को उन्होंने मानसिक कार्यों को करने में निहित संक्रिया के रूप में परिभाषित किया। संक्रिया का अर्थ वह मानसिक चेष्टा, तत्परता और कार्यशीलता से होता है, जिसकी मदद से व्यक्ति किसी भी सूचना सामग्री या विषय वस्तु को चिंतन तथा मनन का विषय बनाते हैं।

3. परिणाम या उत्पाद (Product) — गिलफोर्ड मॉडल की तीसरी विमा उन परिणामों या उत्पादों से सम्बन्धित होती है जो भिन्न-भिन्न प्रकार की विषय वस्तुओं के साथ विभिन्न मानसिक संक्रियाओं के करने के फलस्वरूप प्राप्त होते हैं।

मानसिक कार्यों में निहित उपरोक्त वर्णित चार प्रकार की सामग्री, पाँच प्रकार की संक्रियायें तथा छह प्रकार के उत्पादों के आधार पर 1967 में गिलफोर्ड तथा उनके सहयोगियों ने कहा कि कुल 120 (4 × 5 × 6 = 120) भिन्न-भिन्न प्रकार की मानसिक योग्यताएँ हो सकती हैं, जो 120 भिन्न भिन्न प्रकार के कार्यों में संलग्न होती हैं। स्पष्ट है कि प्रत्येक मानसिक योग्यता किसी एक सामग्री, किसी एक संक्रिया तथा किसी-एक उत्पाद को समाहित करने पर परिलक्षित होती है। परन्तु कालान्तर में किये गये शोध कार्यों के परिणामों के आधार पर गिलफोर्ड ने अपने मॉडल में सुधार करते हुये सामग्री को चार के स्थान पर पाँच भागों - दृश्यिक, श्रवणिक, सांकेतिक, शाब्दिक तथा व्यवहारपरक में विभक्त किया। इस प्रकार उनके इस संशोधित तीन स्तंभ विमा निदर्श (Model) में 5 × 5 × 6 = 150 संघटक (components) हो गये। कालान्तर में गिलफोर्ड ने पुनः सन् 1988 में प्रकाशित अपने अंतिम पेपर 'Some Changes in the Structure of Intellect Model' में जो वर्ष 1987 में उनकी मृत्यु के उपरान्त प्रकाशित हुआ था, में स्मरण को भी दो भागों - स्मृति अभिलेखन (Memory Recording) तथा स्मृति धारण (Memory Retention) में बाटते हुए संक्रिया के छह भाग बताये। इस प्रकार से इस पुनर्संशोधित निदर्श में अब छह संक्रियाएँ, पाँच विषयवस्तु व छः उत्पाद हो गये हैं एवं इसे 6 × 5 × 6 = 180 कारक वाला निदर्श (Model) कहा गया।

I

$5 \times 4 \times 6 = 120$

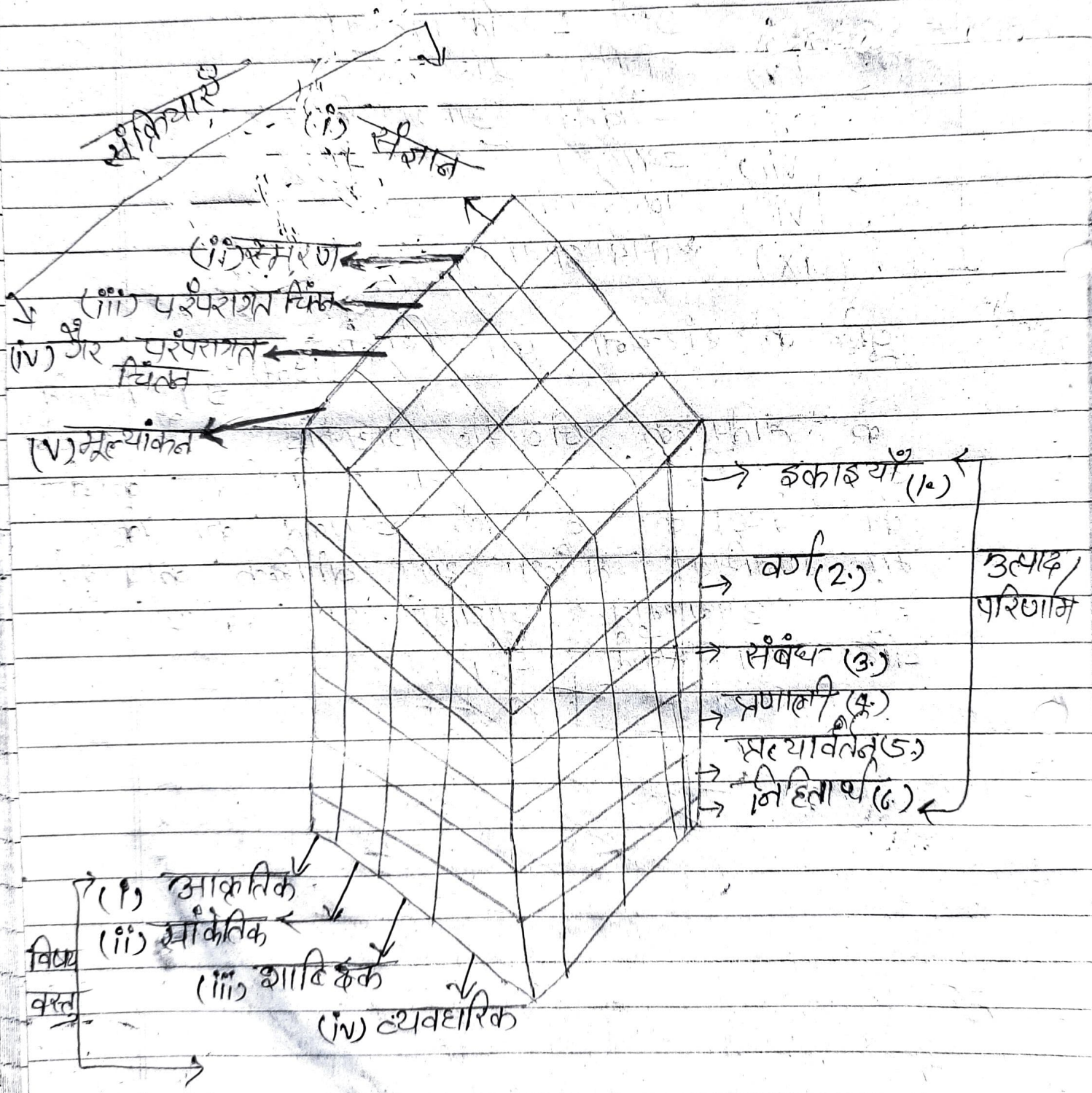

बुद्धि संरचना का प्रथम मॉडल (1967)

संशोधन के बाद का

II

5×5×6 = 150

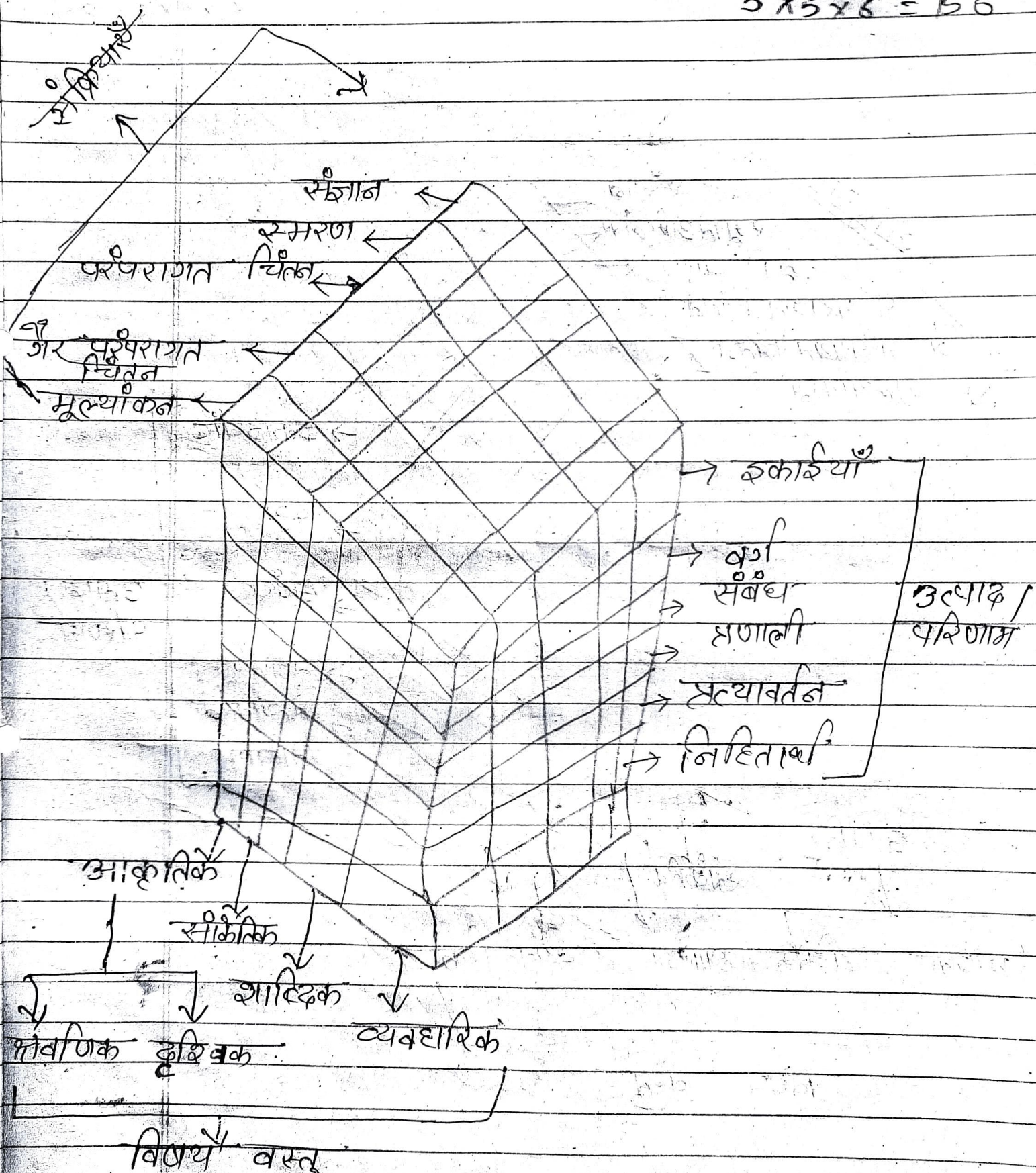

(बुद्धि की संरचना के दूसरे संशोधन (1967) का मॉडल)

III

संक्रियाएँ × विषय-वस्तु × परिणाम

6 × 5 × 6 = 180

मानसिक योग्यताएँ

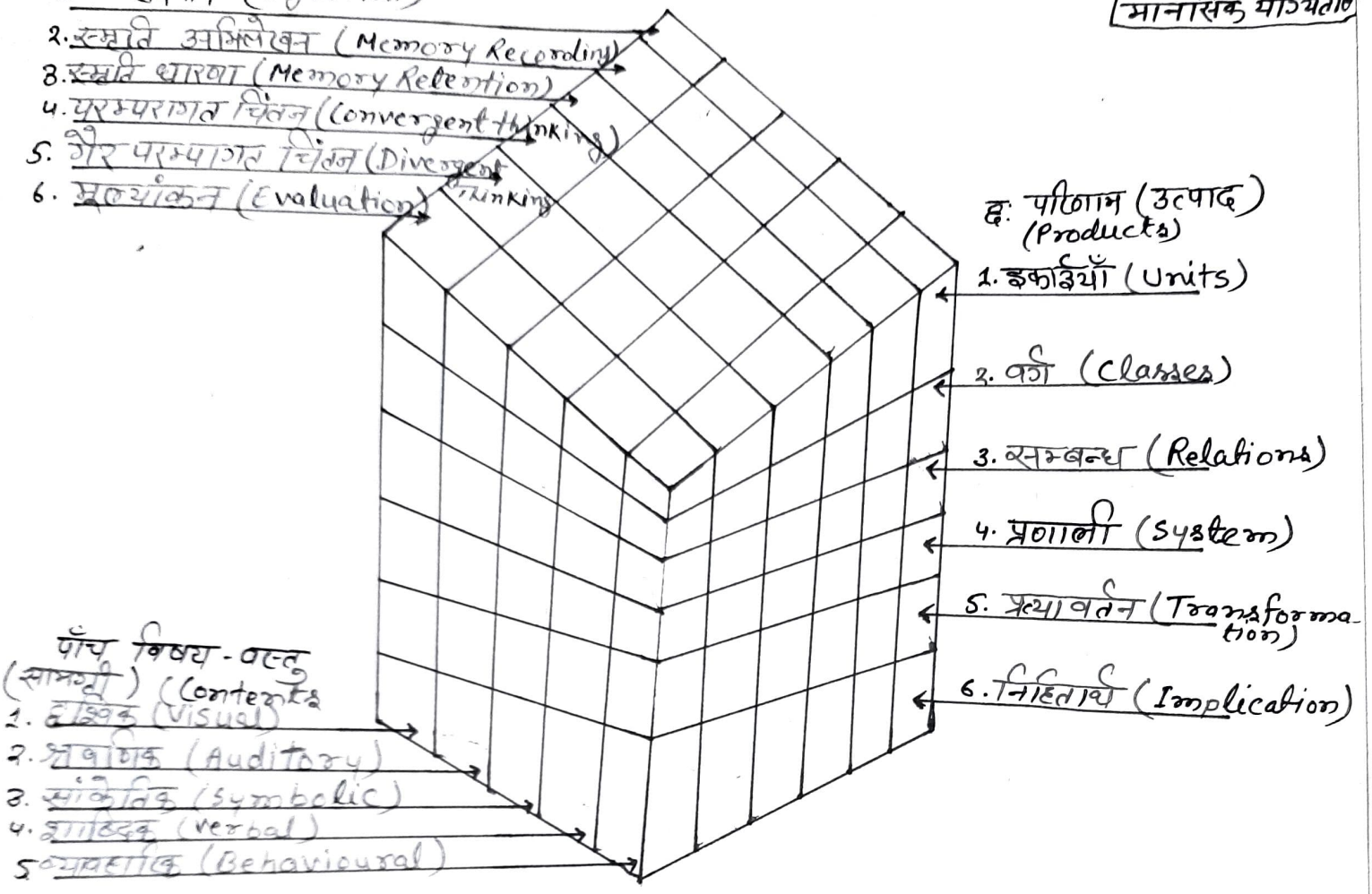

बुद्धि की संरचना का नवीनतम निदर्श (1985)
(Latest Model of Structure of Intellect)